V.V9 1 Arrival 'A' B.A. I Hons (History)

चन्द्रगुप्त II

Q:- Career and achievement of Chandragupta II

Ans: → गुप्तकाल को प्राचीन भारत के इतिहास में स्वर्णिम युग कहा गया है। यह युग प्राचीन भारतीय इतिहास का और साम्राज्यवादी युग था। इस युग में अनेक महान सम्राटों का उदय हुआ। चन्द्रगुप्त द्वितीय का भी इसकाल में महत्वपूर्ण स्थान है। वह पराक्रमी विजेता तथा योग्य शासक था। शकों और कुषाणों आदि विदेशी शासकों की शक्ति पूर्णतः विनष्ट कर उसने देशी राज्य सत्ता को बंगाल की खाड़ी से हिन्दुकुश तक स्थापित किया।

समुद्रगुप्त की पत्नि दत्तदेवी के गर्भ से चन्द्रगुप्त पैदा हुआ था। गुप्त और वाकाटक लेखों से ज्ञात होता है कि उसका दूसरा नाम देवराज और देवगुप्त भी था। साँची के लेख में 'महाराजाधिराज चन्द्रगुप्तस्य देवराज इति प्रियनाम' मिलता है। प्रवरसेन के चम्मक लेख में इसका नाम देवगुप्त मिलता है। चन्द्रगुप्त की प्रथम रानी का नाम कुबेरनागा था जो नागवंश की लड़की थी। इस पत्नि से उत्पन्न पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से हुआ। दूसरी पत्नि ध्रुवस्वामिनी (गोविन्द गुप्त की माता) थी। इससे कुमार गुप्त भी पैदा हुआ था। चन्द्रगुप्त के शासनकाल में 6 अभिलेख प्राप्त हैं जो निम्नलिखित हैं:—

1. मथुरा स्तम्भ लेख — गुप्त सं. 61 या 380 ई.
2. उदयगिरि का लेख — गुप्त सं. 81 या 400 ई.
3. गढ़वा का शिलालेख — गुप्त सं. 88 या 407 ई.
4. सांची का लेख — गुप्त सं. 93 या 412 ई.
5. मथुरा शिलालेख — तिथि के अभाव वर्णावली।
6. मेहरौली का लौह स्तम्भ — तिथि का अभाव है।

इन विभिन्न साक्ष्यों के सर्वेक्षण के बाद कहा जा सकता है कि उसका शासनकाल 375 ई. से 414 ई. तक था। चन्द्रगुप्त की तिथि का कोई प्रमाण तो नहीं मिलता है. परन्तु उसके अभिलेखों में

वे तिथियाँ अंकित हैं जिनसे उसके समय निर्धारण में सहायता मिलता है। उसके पिता ने सद्गुण समझकर उसे अपना उत्तराधिकारी चुना था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय अपने पिता के समान ही महत्वाकांक्षी था। उसे एक विशाल साम्राज्य विरासत के रूप में मिला था। अतः साम्राज्य विस्तार का काम उसे प्रारम्भ से नहीं करना पड़ा। फिर भी अभी देश के सीमाओं में कई ऐसे शासक थे जो सम्राट के विरुद्ध शासकों का आधिपत्य स्वीकार करते थे। इसमें मालवा, सौराष्ट्र, कोशाम, पश्चिमी पंजाब के शक आदि अधिक शक्तिशाली थे। इन सब का सामना करने के लिए एक विशाल सेना का संगठन किया।

दिग्विजय :— चन्द्रगुप्त II के शासनकाल की सबसे प्रमुख घटना पश्चिम तथा उत्तरप्रदेशों की विजय अभियान है। उसने बंगाल तक अपने साम्राज्य की सीमा विस्तृत की और इस प्रकार अपने सुयोग्य पिता के अवशिष्ट कार्य को पूरा किया। उस समय पश्चिम भारत में शक जातियाँ राज्य करती थी; इस जाति को चन्द्रगुप्त II ने पराजित किया। उन लोगों ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर मित्रता स्थापित की थी। चन्द्रगुप्त II ने इन सभी राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया। शक विजय का प्रमाण उसके उक्तियों, शिलालेखों, प्राप्त सिक्कों और अन्य साधनों से मिलता है। उदयगिरि गुफा (मालवा) में मंत्री वीरसेन कहता है कि जब सम्राट चन्द्रगुप्त II समस्त पृथ्वी जीतने के लिए चले थे उस समय भी उसके साथ था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पश्चिमी भारत पर आक्रमण करने के पूर्व मालवा में ठहरा होगा और वहाँ अपना शिविर बनाया होगा। शक राजाओं के चाँदी के सिक्के थे। गुप्त राजाओं में सर्वप्रथम चाँदी के सिक्के चन्द्रगुप्त द्वितीय के ही मिलते हैं। सम्भवतः ये सिक्के शक सिक्कों के अनुकरण पर ही मुद्रित किया गया होगा। उसका

ही प्रचलित किया गया होगा। बाण ने भी उसके शकविजय का उल्लेख किया है इसके बाद ही उसने को विक्रमादित्य घोषित किया होगा। पश्चिमी क्षत्रपों के अंतिम सिंहा रुद्र-सिंह तृतीय (388-91) का है अतः अनुमान लगाया जाता है कि शकों के विरुद्ध उसका अभियान 388 से 401 ई० के बीच हुआ होगा। इसी अवधि में शकों की पराजय हुई और भारत से खदेड़ दिया गया।

शक विजयों के कारण गुप्त साम्राज्य की सीमा-मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र और काठियावाड़ तक ही नहीं वरन तटवर्ती पत्तनों के सम्पर्क में आ गया। इससे व्यापार में काफी प्रगति हुई विदेशियों के साथ सांस्कृतिक संबंध भी स्थापित हुआ। शासक शासनव्यवस्था के कारण देशी व्यापार को भी बल मिला। इस युग में उज्जैन में भी सारे वाणिज्य पथ केन्द्रीय सूत्र था। शक विजय के बाद उज्जैन धार्मिक और राजनैतिक केन्द्र हो गया। चन्द्रगुप्त II उज्जैन को अपनी राजधानी बनाकर अपनी राजनीतिज्ञता और चतुराई का परिचय दिया। उज्जैन महत्व का वर्णन राजशेखर ने भी किया है शकों के मद को चूर करने के ~~लिए~~ कारण इसे शकारि भी कहा गया है उज्जयिनी और अवन्ती के शकक्षत्रपों का विनाश कर विक्रमादित्य की उपाधि धारण की उसने अपने पराक्रम से गुप्त साम्राज्य को दृढ़ किया।

गणराज्यों का विनाश :→ पश्चिमोत्तर भारत के कुषाण, अवन्ति के महाक्षत्रपों तथा गुप्त साम्राज्य के बीच में मद्रगण से लेकर दक्षिण में रथपरिक-गण तक छोटे-छोटे गणों की एक पतली दिवार सी थी। स्वतंत्रता प्रेमी होते हुए भी ये गण विदेशी आक्रमणों को रोकने में ये सक्षम नहीं थे। इसके विनाश करने के बाद उसी दिशा में चन्द्रगुप्त विजय यात्रा किया और शकक्षत्रपों का अन्त किया। पश्चिमोत्तर अभियान के क्रम में ही कुषाणों के अवशेषों को भी समाप्त किया। मथुरा अभिलेख में गुप्त-

राजाओं को भट्टारक, महाराजाधिराज, आदि कहा गया है। महाराजाधिराज कुषाणों के 'शहनशाह' का रूपान्तर है। डा० भण्डारकर के अनुसार चन्द्रगुप्त II सर्वप्रथम मथुरा के कुषाणों को भगाया। इस बारे में मतभेद है पर इतना मान्य है कि पश्चिमोत्तर भारत में जो शक, कुषाण शासक किसी भी रूप में अवशेष बचे थे, उन्हें चन्द्रगुप्त ने पराजित किया और उस क्षेत्र को अपने साम्राज्य में मिला लिया। उज्जैन को राजधानी बनाकर अपनी प्रजा को सन्तुष्ट किया।

पूर्वी प्रत्यन्त राज्यों का अन्त :— मेहरौली स्तंभ में वर्णित चन्द्र को अधिकतर विद्वान चन्द्रगुप्त II ही मानते हैं। अतः इसमें जिस विजयों का वर्णन है वह चन्द्रगुप्त II का ही रहा होगा। इस स्तंभ से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त II सिन्धु नदी के सातों मुहानों को पार करके वाह्लिक (बल्ख) के शासकों को जीता। इसमें लिखा है कि तीर्त्वा सप्त मुखानि येन समरे सिन्धोर्जिता वाह्लिकाः। मेहरौली स्तंभ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि चन्द्रगुप्त II ने पंजाब पर अपना पूरा अधिकार कर लिया और उत्तर पश्चिम में शक-कुषाणों का अवशेष सदा के लिए मिटा दिया।

शकों को अपने राज्य में मिलाने के बाद उसने दक्षिणी भारत की ओर ध्यान दिया। उसने दक्षिणी नरेशों से मित्रता एवं वैवाहिक संबंध स्थापित किया। चन्द्रगुप्त II ने नागकन्या कुबेरनागा से विवाह किया, यही प्रथम महारानी थी। इसी से प्रभावती गुप्त का जन्म हुआ, चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री की शादी प्रतिष्ठित राजवंश वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से कर दिया। पूना ताम्रलेख से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त और वाकाटकों में घनिष्ठ संबंध था। इस विवाह का मुख्य कारण यह भी था कि गुप्त राजाओं द्वारा विजित शक, कुषाण प्रदेशों पर दक्षिणी नरेशों का आक्रमण न हो। गुप्त साम्राज्य को संगठित रखने के लिए यह अत्यन्त लाभकारी था।

इसलिए इस वैवाहिक संबन्ध का बहुत महत्व हो सकता है। राजनीति का अद्भुत चाल कहा गया है। वाकाटकों की भौगोलिक स्थिति शकों के विरुद्ध चन्द्रगुप्त II का शत्रु और मित्र दोनों हो सकता था। इस वैवाहिक संधि से उसने कूटनीति का परिचय दिया। प्रवरसेन II के शासन काल में गुप्त प्रभाव वाकाटक राज्य में बना रहा।

कुन्तल :— कुछ इतिहासकार इस प्रवरसेन को कुन्तल का शासक मानते हैं। बम्बई का दक्षिणी तथा मैसूर का उत्तरी भाग कुन्तल प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध था। सातवाहनों के बाद इस प्रदेश पर चुटुवंश का शासक था। इसके बाद कदम्बों का शासन हुआ। कुन्तलेश्वर के साथ भी इसका गहरा सम्बन्ध था। इसके इस कथन का उल्लेख भोज के शृंगार प्रकाश में मिलता है। भोज के 'शृंगार प्रकाश' के आठवें प्रकाश में कालिदास और चन्द्रगुप्त II तथा कुन्तल नरेश के बीच बातचीत होने का उल्लेख मिलता है। यह भी कहा जाता है कि कालीदास चन्द्रगुप्त का दूत बनकर कुन्तल नरेश के यहाँ गये थे। क्षेमेन्द्र 'औचित्यविचार चर्चा' से भी इसकी पुष्टि होती है। कदम्ब शासक मयूरशर्मन के पुत्र और पौत्र चन्द्रगुप्त II के समकालीन थे। कदम्बों का चौथा राजा ककुत्स्थवर्मन उस समय कुन्तल नरेश था। तालगुण्ड प्रशस्ति में कहा गया है कि कदम्ब शासक ककुत्स्थवर्मन ने गुप्तवंश एवं अन्य वंशों के साथ वैवाहिक संबन्ध स्थापित किया था। D.C. Sarkar का विश्वास है कि कदम्ब शासक ने अपनी एक कन्या को नरेन्द्रसेन से तथा दूसरी कन्या का विवाह चन्द्रगुप्त II के पुत्र तथा पौत्र से किया। कुन्तल के बाद के शासकों ने भी गुप्तों को आदरपूर्वक माना है। कुन्तल के लेखों में चन्द्रगुप्त II विक्रमादित्य को उज्जैनी पुरवराधीश्वर तथा पाटलीपुरवराधीश्वर भी कहा है। इस प्रकार दे-

जाता है कि चन्द्रगुप्त II वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा नाग, वकाटक और कुन्तल के शासकों के साथ मित्रता का सम्बन्ध स्थापित कर लिया।

चन्द्रगुप्त II ने विजय में केवल शस्त्र का ही प्रयोग नहीं किया बल्कि नीति से भी काम लिया। और इसमें वैवाहिक सम्बन्ध रखा। जिसका प्रयोग उसने अत्यन्त शक्तिशाली राज्यों को अपने अधीन लाने में किया।

राज्य विस्तार:— चन्द्रगुप्त II ने अपने पराक्रम से अपने पिता के साम्राज्य को और विशाल बना दिया। हिमालय की घाटियों से नर्मदा नदी तक और पूर्वी बंगाल से लेकर काठियावाड़ तक के समस्त राज्य उसके साम्राज्य के अंतर्गत थे। समस्त भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के बाद उत्तम शासन प्रबन्ध को संगठित करने का श्रेय चन्द्रगुप्त II को ही है विभिन्न विभागाध्यक्षों की व्यवस्था जिसका उल्लेख बसाढ़ प्राप्त मुद्राओं पर और दामोदरपुर ताम्रपत्र में मिलते हैं। फाहियान के वर्णन से भी इसकी पुष्टि मिलती है

चन्द्रगुप्त II महत्वाकांक्षी युवक था। यह कहना न होगा कि चन्द्रगुप्त II राजनीतिक आंदोलन को पूरा किया। जिसका सूत्रपात नाग और वकाटकों ने किया था और जिसकी धाराओं को स्वयं उसके पिता ने विस्तृत किया था। विक्रमादित्य के अलावा विक्रमांक अजीत विक्रम सिंह विक्रम सिंह चन्द्र, नरेन्द्र चन्द्र, शकारि आदि उपाधियों का व्यवहार उसके लिए हुआ है इसका प्रमाण उसके मुद्राओं से भी मिलता है उसने दृढ़ शासन व्यवस्था स्थापित रखा। वाणिज्य एवं व्यवसाय में अभूतपूर्व विकास हुआ। यह विद्वानों, कलाकारों और कवियों का भी आश्रयदाता था इसकी धार्मिक नीति भी बड़ी उदार थी वह विष्णु भक्त

था फिर भी उसमें उच्च कोटि की धार्मिक सहिष्णु-
ता वर्तमान थी। यह कहा गया है कि बौद्ध धर्मावलम्बी
अमृकार्दव उसका सेनापति था जिसकी पुष्टि
साँची शिलालेख से मिलती है उसका संधि विग्रह
वीरसेन शाव ने शिवालय एक था। चीनी यात्री फाहि-
यान उसके समय में भारत आया और इस सम्बन्ध
में गुणगान किया है। यह कहा गया है कि चन्द्रगुप्त
II का व्यक्तित्व महान था।

— o —